

बजरंग बाण

"दोहा"

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करै सनमान!
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान!!

चौपाई

जय हनुमंत संत हितकार । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ।
जनके काज विलम्ब न कीजै । आतुर दौड़ महा सुख दीजै ।
जैसे कूदी सिन्धु महिपारा । सुरसा बदन पैठी विस्तारा ।
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका ।

जाय विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परमपद लीन्हा ।
बाग उजारी सिंधु महँ बोरा । अति आतुर यमकातर तोरा ।
अक्षयकुमार मारी संहारा । लूम लपेटी लंक को जारा ।
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ।

अब विलंब केही कारन स्वामी । कृपा करहुँ उर अन्तर्यामी ।
जय जय लखन प्राण के दाता । आतुर होई दुःख करहु निपाता ।
जय गिरिधर जय जय सुखसागर । सुर-समूह-समरथ, भट-नागर ।
ॐ हनु हनु हनु हनुमत हठीले । बैरिहि मारू बज्र की किले ।

गदा बज्र लै बैरिहि मारो । महारज प्रभु दास उबारो ।
ओंकार हुंकार महाबीर धाबो । बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ।
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमत कपीसा । ॐ हूं हूं हूं हनु अरि उर शीशा ।
सत्य होहु हरि शपथ पायके । राम दूत धरु मारू जायके ।

जय जय जय हनुमंत अगाधा । दुःख पावत जन केही अपराधा ।
पूजा जपतप नेम अचारा । नहीं जानत हौं दास तुम्हारा ।
वन उपवन मग गिरीगृह माहीं । तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ।
जनकसुता हरि दास कहावौ । ताकी सपथ विलंब न लाबो ।
जै जै जै धुनि होत अकासा । सुमिरत होय दुसह दुःख नाशा ।
चरण पकरि, कर जोरि मनावौ । यहि अवसर अब केही गोहरावौ ।

जय अंजनि कुमार बलवंता । शंकर सुवन वीर हनुमंता ।
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ।
भुत प्रेत पिशाच निशाचर, अग्नि बैताल काल मारीमर ।
इन्हें मारू तोहिं सपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ।

जनक सुता हरिदास कहावो । ताकि सपथ विलंब न लावो ।
जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ।
चरण-शरण कर जोरि मनावौ । यहि अवसर अब केहि गोहरावौ ।
उठू-उठूचलु तोहिं राम दोहाई । पायं परौं कर जोरि मनाई ।

ओम चं चं चं चं चपल चलंता । ओम हनु हनु हनु हनु हनुमंता ।
ओम हं हं हं देते कपि चंचल । ओम सं सं सहमि पराने खल दल ।
अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होत आनंद हमारो ।
यहि बजरंग बाण जेहि मारे । ताहि कहो फिर कौन उबारे ।

पाठ करै बजरंग बाण की । हनुमत रक्षा करै प्राण की ।
यह बजरंगबाण जो जापै । तेहि ते भूत प्रेत सब कापै ।
धुप देय अरु जपै हमेशा । ताकि तनु नहिं रहे कलेशा ।

दोहा

प्रेम प्रतितिहीं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान ।